A-PDF OFFICE TO PDF DEMO: Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

जैविक खेती

प्रदेश में कुल कृषि क्षेत्र का लगभग 55 प्रतिशत पर्वतीय एवं वर्षा आधारित क्षेत्र के अंतर्गत है। जलवायिक विविधता के कारण यहॉ कई किस्म स्थानीय फसलें बोयी जाती हैं, जो पोषक तत्वों तथा औषधीय गुणों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं. परंपरागत रुप से उगायी जाने वाली इन फसलों को जैविक मोड में उगाने पर इनके व्यावसायिक उत्पादन की संभावनाओं के दृष्टिगत जैविक उत्पाद परिषद् की स्थापना की गई है। जिसके सहयोग से परंपरागत कृषि क्षेत्र में जैविक उत्पादन करते हुये फसल उत्पादों की गुणवत्ता बढाने का प्रयास किया जा रहा है. जैविक खेती एक स्वदेशी एवं सस्ती तकनीक है।

जैविक कृषि कार्यक्रम का मुख्य उददेश्य

1– उत्तम गुणवत्ता युक्त खाद्य पदार्थो का अधिक मात्रा में उत्पादन करना।
2– प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग।
3– पौधों एवं जन्तुओं का उपयोग कर जैवकीय चक्र को गति प्रदान करना।
4– मृदा की दीर्घकालीन उर्वरता बनाये रखना।
5– कृषि तकनीकों से होने वाले सभी प्रदूषणों से बचाव।
6– कृषकों को सुरक्षित वातावरण के साथ –साथ अधिकतम उत्पादन द्वारा संतुष्टि।

उत्तराखण्ड जैविक उत्पाद परिषद

उत्तराखण्ड जैविक उत्पाद परिषद का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में जैविक कृषकों को तकनीकी, प्रशिक्षण, आन्तरिक प्रमाणीकरण तथा विपणन व्यवस्था कराना हैं । परिषद् द्वारा संपादित कार्यो का विवरण निम्नवत् है–

जैविक बासमती कार्यक्रम

जैविक बासमती कार्यक्रम वर्ष 2003 में 331 कृषकों के 178 है0 क्षेत्र के साथ प्रारम्भ किया गया था। जैविक बासमती निर्यात कार्यक्रम के अर्न्तगत वर्ष 2013–14 मे 4500 है0 क्षेत्र मे जैविक बासमती उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। इस हेतु विभिन्न क्रेता संस्थाओ से जैविक उत्पादक समूहों का अनुबन्ध कराया जा चुका है। कृषकों को अपने उत्पाद का बेहतर लाभ मिला है, जो निम्न तालिका में प्रदर्शित है–

क्र0 सं0	वर्ष	कृषकों की संख्या	क्षेत्रफल (है0)	उत्पादन (टन में)	कृषक को प्राप्त औसतन मूल्य (रू0 प्रति कु0)
1	2009–10	2300	2216	4200	3200
2	2010–11	6500	6000	8000	2500
3	2011–12	7500	8000	9500	1800
4	2012–13	9400	6000	14500	32000
5	2013–14	9500	7500	16000	48000

बाजार मांग के आधार पर जैविक फसलों हेतु क्षेत्र चयन

विभिन्न क्रेता संस्थाओं तथा बाजार की निरन्तर मांग के आधार पर कुछ चिन्हित फसलों का समूह क्षेत्र चयन कर उनमें उन्नत जैविक कृषि पद्धतियों के आधार पर प्रशिक्षण, उत्पादन, प्रमाणीकरण हेतु दस्तावेजीकरण आदि कार्यक्रमों का संचालन तकनीकी प्रकोष्ठ द्वारा किया जा रहा है। चयनित फसलों में मिर्च, राजमा, चौलाई, सोयाबीन, बासमती, सब्जी इत्यादि हैं।

प्रदेश में विभिन्न जैविक फसलों हेतु चिन्हित क्षेत्र	
जैविक फसलें	**चिन्हित क्षेत्र**
फल एवं सब्जी	टिहरी(चम्बा), नैनीताल(कोटाबाग, रामगढ़), हरिद्वार(लक्सर, भगवानपुर)
मिर्च	अल्मोड़ा(सल्ट, सियाल्दे, भिक्यासैंण), नैनीताल(बेतालघाट, ओखलकांडा)
दालें	उतराकाशी, टिहरी, रूद्रप्रयाग, पौड़ी, पिथौरागढ़, चमोली, नैनीताल
राजमा	उतरकाशी (भटवाड़ी, मोरी), चमोली (जोशीमठ), नैनीताल(रामगढ़), पिथौरागढ़ (मुनस्यारी), देहरादून(चकराता)
सोयाबीन	नैनीताल(कोटाबाग), पिथौरागढ़, रूद्रप्रयाग, टिहरी,
बासमती	देहरादून (मैदानी क्षेत्र), उधमसिंह नगर, हरिद्वार, नैनीताल(कोटाबाग, रामनगर)
चौलाई	उतरकाशी (भटवाड़ी,), चमोली (गैरसैंण, देवाल, घाट, जोशीमठ), रूद्रप्रयाग (उखीमठ, अगस्तमुनि, जखोली), टिहरी(नरेन्द्रनगर, चम्बा, कीर्तिनगर)
शक्कर	हरिद्वार(रूड़की, नारसन, भगवानपुर),उधमसिंह नगर(बाजपुर)
लालधान	उतरकाशी (पुरोला)
सगन्ध पौध	चमोली(जोशीमठ), देहरादून(विकासनगर, डोईवाला)
कुट्टू	चमोली (देवाल, जोशीमठ), पिथौरागढ़ (धारचूला), उत्तकाशी (नौगांव)
मसाले (अदरक, हल्दी)	अल्मोड़ा, नैनीताल, चम्पावत, बागेश्वर, टिहरी, देहरादून

राज्य जैविक प्रशिक्षण एवं अनुसन्धान केन्द्र, मजखाली (अल्मोडा)

राज्य में जैविक कृषि प्रशिक्षण की आवश्यकता को महसूस करते हुये मंजखाली (अल्मोडा) में प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी है. इस केन्द्र पर अब तक 275 प्रशिक्षण कार्य{मों का आयोजन किया जा चुका है, जिसके माध्यम से कुल 6505 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षत किया जा चुका हैं. जिसमें न्याय पंचायत प्रभारी, सहायक विकास अधिकारी कृषि, सहायक विकास अधिकारी उद्यान, अन्तर्विभागीय तथा जैविक उत्पादक समूह के कृषक सम्मिलित हैं।

जैविक प्रमाणीकरण

जैविक प्रमाणीकरण ही जैविक उत्पाद को बाजार में जैविक के रूप में मान्यता प्रदान करता है। परिषद् द्वारा प्रदेश में जैविक खेती में जुड़े लघु एवं सीमान्त कृषकों के जैविक प्रमाणीकरण का कार्य

उत्तराखण्ड स्टेट ऑग्रेनिक सर्टिफिकेशन एजेंसी, देहरादून के माध्यम से समूह के रूप में कराया जा रहा है। वर्ष 2013–14 के जैविक प्रमाणीकरण के लक्ष्य 50,000 है0 क्षेत्र जिसमें 70,000 कृषक आच्छादित होने हैं, के सापेक्ष **60,000 कृषकों (41000 है0 क्षेत्र)** का आन्तरिक निरीक्षण का कार्य जारी है। प्रदेश में जैविक प्रमाणीकरण का कार्य कुछ निजी संस्थाओं द्वारा भी किया जा रहा है। निजी संस्थाओं द्वारा प्रमाणीकरण के अन्तर्गत आच्छादित किये गये क्षेत्रफल को सम्मिलित करते हुए प्रदेश की वर्षवार जैविक प्रमाणीकरण प्रगति निम्नवत है –

वर्ष	वर्षवार जैविक प्रमाणीकरण					
	परिषद् के माध्यम से		निजी संस्थाओं के द्वारा		कुल	
	कुल क्षेत्रफल (है0)	कुल कृषक	कुल क्षेत्रफल (है0)	कुल कृषक	कुल क्षेत्रफल (है0)	कुल कृषक
2009–10	37000.00	53000	8144.44	17000	45144.44	70000
2010–11	43987.00	63105	17816.00	36422	61803.00	99527
2011–12	29324.00	44046	16175.00	13098	45499.00	57144
2012–13	29525.89	43965	8622.27	17678	38148.16	61643
2013–14	26116.14	40346	339.86	2345	26456.00	42691

जैविक उत्पादों का विपणन

परिषद् प्रदेश के विभिन्न जैविक उत्पादों के विपणन हेतु नये–नये बाजारों की खोज के लिये निरन्तर प्रयासरत है जिसके लिये प्रदेश के अन्दर तथा बाहर मेलों एवं प्रदर्शनियों में प्रतिभाग किया जाता है. इसके अतिरिक्त क्रेता –विक्रेता की बैठकों के आयोजन भी सुनिश्चित कराये जा रहे हैं. परिषद के माध्यम से वर्ष 2009–10 से वर्तमान तक लगभग रू0 4124.28 लाख मूल्य के जैविक उत्पादों का विपणन कराया जा चुका है, जिसका विवरण निम्नवत है।

वर्ष	जैविक उत्पादों का विपणन (लाख रुपये में)
2009–10	933.00
2010–11	700.00
2011–12	470.00
2012–13	749.00
2013–14	1272.28
कुल	**4124.28**

1. प्रदेश का पहला पहाड़ी व्यंजनों का जैविक रेस्त्रंरा **'हरितिमा'** का शुभारम्भ तेरा गांव सहस्रधारा रोड़ देहरादून में गत 5 जून, 2012 में किया गया है।
2. प्रदेश के चयनित पांच विकासखण्डों को पूर्ण रूप से जैविक रूप से संतृप्तीकरण के लिए महत्वकांक्षी योजना प्राप्त हुई है जिसका क्रियान्वयन वर्ष 2013–14 से किया जाना है।

जैविक कृषि विकास परियोजना

योजना का क्रियान्वयन कलस्टर अप्रोच आधार पर किया जाता है। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत स्वीकृत जैविक कृषि विकास की परियोजना–2012–13 हेतु अनुमोदित धनराशि रु0 338.58 लाख के सापेक्ष रु0 319.32 लाख का उपयोग किया गया। जिसके अर्न्तगत समस्त जनपदों में विकासखण्ड स्तर पर कार्यरत मास्टर ट्रेनर्स के माध्यम से 2452 वर्मी कम्पोस्ट पिट, 1648 नाडेप पिट, 817 बैम्बू नाडेप पिट, 321 वर्मीकल्चर सेंटर एंव 1950 वृहद इनाकुलम इकाई की स्थापना के कार्य संपादित कराये गये हैं। साथ ही कृषकों को जैविक खेती संबधी जानकारी प्रदान करने हेतु 238 ग्राम स्तरीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम, 315 न्या0पं0 स्तर पर चयनित ग्राम में जैविक प्रशिक्षण कार्यक्रम, मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण एवं जैविक प्रमाणीकरण का कार्य कराया गया है। वर्तमान में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत स्वीकृत **प्रमोशन आफ आर्गेनिक फार्मिंग**–2013–14 जैविक कृषि विकास की परियोजना का तीसरा चरण वर्ष 2013–14 में संपादित किया जा रहा है, जिसके लिये रु0 344.25 लाख की धनराशि अनुमोदित की गयी है। जिसके अर्न्तगत समस्त जनपदों में विकासखण्ड स्तर पर कार्यरत मास्टर ट्रेनर्स के माध्यम से वर्मी कम्पोस्ट पिट, नाडेप पिट एवं बैम्बू नाडेप पिट की स्थापना के कार्य संपादित कराये जा रहे हैं तथा कृषकों को जैविक खेती संबधी जानकारी प्रदान करने हेतु ग्राम स्तरीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण एवं जैविक प्रमाणीकरण का कार्य किया जा रहा है। उत्तराखण्ड जैविक उत्पाद परिषद् द्वारा प्रदेश में जैविक खेती में जुड़े लघु एवं सीमान्त कृषकों के जैविक प्रमाणीकरण का कार्य उत्तराखण्ड स्टेट ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन एजेंसी, देहरादून के माध्यम से समूह के रूप में कराया जा रहा है एवं जैविक उत्पादों के विपणन का कार्य भी कराया जा रहा है। योजनांतर्गत प्रस्तावित भौतिक कार्यक्रमों के सापेक्ष दिसम्बर माह तक संपादित कार्यों का विवरण निम्नवत् है–

भौतिक कार्य मद	इकाई	लक्ष्य	पूर्ति
वर्मी कम्पोस्ट पिटों का निर्माण	संख्या	6000	6044
नाडेप पिटों का निर्माण	संख्या	2000	1979
बैम्बू नाडेप का निर्माण	संख्या	500	504
मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण	संख्या	95	95
ग्राम स्तरीय कृषक प्रशिक्षण	संख्या	240	240
मास्टर ट्रेनर का मानदेय एवं यात्रा व्यय	संख्या	95	94
व्यय की प्रगति	**लाख रु0**	**344.25**	**338.06**

विपणन के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियाँ

- प्रदेश में जैविक कृषि कार्यक्रम के अन्तर्गत अब तक 1123 जैविक कृषक उपसमूह, 186 जैविक समूह , 60 जैविक फैडरेशन तथा 158 कलस्टर संचालित हैं, जिनमें समस्त कलस्ट को बाजार तक जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में 32 कलस्टर जिसमें कि 10 हजार कृषक सम्मिलित हैं को बाजार के साथ जोड़ा गया है।
- वर्तमान में मांग के सापेक्ष बासमती, सोयाबीन, चौलाई, गन्ना, मिर्च, गुलाब जल इत्यादि जैसे उत्पादों का विक्रय कार्यक्रम चल रहा है। वर्तमान की क्रय दर के अनुसार जैविक कृषकों को 20 से 40 प्रतिशत अधिक आय प्राप्त होगी।
- जैविक उत्पादक समूहों द्वारा उत्पादित उत्पादों के विपणन हेतु स्थानीय स्तर पर देहरादून के विकास भवन के सरस विपणन केन्द्र में एक 'उत्तराखण्ड जैविक फूड्स' की रिटेल दुकान है, जहाँ से प्रतिमाह लगभग 40–50 हजार के जैविक उत्पादों का विक्रय होता है।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में स्वीकृत जैविक कृषि कार्यक्रम

प्रमोशन आफ आर्गेनिक फार्मिंग–2013–14 (भाग–1+2) की मासिक प्रगति

वर्ष 2013–14 **भौतिक संख्या में/वित्तीय लाख रू0 में**

क्र0 सं0	जनपद	वर्मी पिट (10'X3'X2')		नाडेप (10'X3'X2')		बैम्बू नाडेप (10'X3'X2')		मास्टर ट्रेनर (10'X3'X2')	
		भौतिक	वित्तीय	भौतिक	वित्तीय	भौतिक	वित्तीय	भौतिक	वित्तीय
01	**02**	**03**	**04**	**05**	**06**	**07**	**08**	**09**	**10**
01.	चमोली	560	17.92	190	5.70	60	0.45	9	7.92
02.	देहरादून	340	10.88	140	4.20	30	0.23	6	5.28
03.	पौड़ी	900	28.80	330	9.90	100	0.75	15	13.20
04.	रूद्रप्रयाग	300	9.60	60	1.80	30	0.23	3	2.24
05.	टिहरी	600	19.20	200	6.00	44	0.33	8	7.44
06.	उत्तरकाशी	360	11.52	120	3.60	40	0.30	6	5.28
07.	हरिद्वार	340	10.88	120	3.60	0	0.00	6	5.28
08.	अल्मोड़ा	800	25.60	300	9.00	56	0.42	11	9.68
09.	बागेश्वर	235	7.04	32	0.96	34	0.26	3	1.76
10.	चम्पावत	350	11.20	80	2.40	30	0.21	4	3.52
11.	नैनीताल	556	17.24	124	3.70	36	0.27	8	5.12
12.	पिथौरागढ़	300	9.60	160	4.80	44	0.33	8	6.58
13.	ऊधमसिंहनगर	403	10.87	123	3.10	0	0.00	7	6.99
यू0ओ0सी0बी0		**0**	**0.00**	**0**	**0.00**	**0**	**0.00**	**0**	**0.00**
योग		**6044**	**190.35**	**1979**	**58.76**	**504**	**3.78**	**94**	**80.29**

क्र0 सं0	जनपद	ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण		मास्टर ट्रेनरों का प्रशिक्षण		कुल वित्तीय		पूर्ति प्रतिशत में	प्रमाणिकरण के लक्ष्य (है0 में)		वर्ष 2012–13 में प्रमा0 (है0 में)
		भौतिक	वित्तीय	भौतिक	वित्तीय	लक्ष्य	पूर्ति		लक्ष्य	पूर्ति	
01	02	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
01.	चमोली	20	0.25	0	0.00	32.24	32.24	100.00	3500	2000.00	2538.05
02.	देहरादून	15	0.19	0	0.00	20.77	20.77	100.00	3000	1743.02	2344.39
03.	पौड़ी	32	0.40	0	0.00	53.05	53.05	100.00	6000	4063.53	441.15
04.	रूद्रप्रयाग	15	0.19	0	0.00	14.45	14.06	97.28	2500	1597.00	855.63
05.	टिहरी	20	0.25	0	0.00	33.70	33.22	98.58	4000	2443.56	1705.56
06.	उत्तरकाशी	15	0.19	0	0.00	20.89	20.89	100.00	3500	3370.14	1802.30
07.	हरिद्वार	15	0.19	0	0.00	19.92	19.95	100.00	3000	1716.51	1770.80
08.	अल्मोड़ा	25	0.31	0	0.00	45.01	45.01	99.99	6000	3626.00	1533.27
09.	बागेश्वर	15	0.19	0	0.00	12.88	10.21	79.25	3000	1510.40	3542.49
10.	चम्पावत	15	0.19	0	0.00	17.53	17.52	99.92	4000	3510.00	3076.96
11.	नैनीताल	18	0.21	0	0.00	28.71	26.54	92.46	4500	3125.00	3617.46
12.	पिथौरागढ़	20	0.25	0	0.00	22.02	21.56	97.91	4000	3862.00	0.00
13.	ऊधमसिंहनगर	15	0.19	0	0.00	21.15	21.15	100.00	3000	2604.00	893.79
यू0ओ0सी0बी0		0	0.00	0	1.90	1.90	1.90	100.00		0.00	
योग		240	2.99	0	1.90	344.25	338.06	98.20	50000	35171.16	24121.85